कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

B.S.E.R. A

क्रम संख्या 989412

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय .... व्यवसाय अध्ययन

परीक्षा का दिन........ बुधवार

दिनांक 09-04-25

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थः 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	18	19	4
2	6	20	4
3	12	21	
4	2	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	3	योग	80
15	3	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 34768

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 178/2024

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाडें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	1.	(i) (ब) असंगठित उपभोक्ता।
1		(ii) (अ) उपार्जन का स्थगित।
1		(iii) (अ) मध्यस्तरीय प्रबंध।
1		(iv) (ब) चार।
1		(v) (अ) आंतरिक।
1		(vi) (ब) पेंशन।
1		(vii) (ब) छः।
1		(viii) (द) पूंजी बजटिंग निर्णय।
1		(ix) (अ) दो।
1		(x) (स) पद प्रतिष्ठा।
1		(xi) (ब) परामर्श।
1		(xii) (ब) नियोजन।
1		(xiii) (अ) नियोजन।
1		(xiv) (ब) विकास एवं विस्तार।

BSER-17R/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1		(xv) (अ) सेवा का उद्देश्य।
1		(xvi) (अ) चार।
1		(xvii) (अ) भर्ती।
1		(xviii) (अ) चालू सम्पति।
18		
1	2.	(i) राज्य सरकार।
1		(ii) ~~अवधारणाएँ~~ अनिश्चित
1		(iii) वित्तीय विपणन नियोजन।
1		(iv) ~~निर्देशन~~ | अभिप्रेरणा
1		(v) अधिकार।
1		(vi) नियंत्रण।
6		
1	3.	(i) टूथपेस्ट।
1		(ii) प्रबंध के सिद्धांत लचीले होते हैं, क्योंकि यह ठोस प्रकृति के नहीं होते हैं तथा यह व्यवसाय के आकार एवं उसकी प्रकृति एवं व्यवहार से अपने आप को ढाल लेते हो
1		(iii) अभिप्रेरणा एक जटिल प्रक्रिया है, क्योंकि यह मानव के आंतरिक मन में जागृत होती है। यह एक मानसिक स्थिति होने के कारण इसे बार-बार दोहराना पड़ता है

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) अनौपचारिक संगठन :- वह संगठन जिसमें व्यक्ति एवं समूह बिना किसी उद्देश्य के बात-चीत करते हैं एवं अपनी सामाजिक उद्देश्य को पूरा करते हैं वह अनौपचारिक संगठन कहलाता है।

(v) अभिरुचि परीक्षा :- इस परीक्षा के माध्यम से कर्मचारियों की आंतरिक एवं दैनिक अभिरुचियों का पता लगाया जाता है। इससे व्यवसाय को उसकी कार्य के प्रति अभिरुचि का भी पता चलता है।

(vi) ऋण समता अनुपात की गणना का सूत्र है :-

ऋण समता अनुपात = ऋण / समता या ऋण / ऋण + समता

(vii) ~~संकेतों~~ डिकोडिंग द्वारा संदेश को संकेतों में परिवर्तन किया जाता है।

(viii) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 का स्थान लिया है।

(ix) नियंत्रण, नियोजन के पूर्वानुमानों पर आधारित होता है।

(x) बजट :- बजट से तात्पर्य व्यवसाय की भविष्य में आने वाली परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाकर उन्हें गणितीय संख्याओं में व्यक्त करना होता है। इससे व्यवसाय में होने वाले खर्चों का संतुलन बना रहता है क्योंकि इसमें एक निर्धारित राशि होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1 (xi) आवसायिक पर्यावरण गतिशील इसलिए होता है क्योंकि इसके अंतर्गत आने वाले सभी पर्यावरण बाह्य अथवा बाहरी प्रकृति के होते हैं जिन्हें अवसाय द्वारा नियंत्रित या बदला नहीं जा सकता है।

1 (xii)

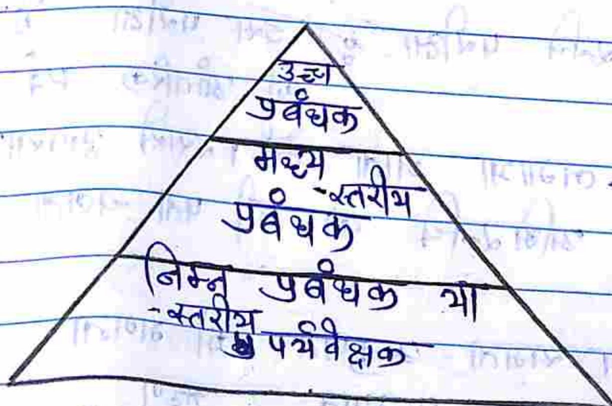

12

4. (अ) (i) विशिष्ट शक्तियाँ :- वे पर्यावरण शक्तियाँ जो अवसाय से करीबी नाता है जिनका दैनिक गतिविधियों में ये शक्तियाँ महत्व रखती हैं, उसे विशिष्ट शक्तियाँ कहते हैं जैसे :- ग्राहक, निवेशक, आपूर्तिकर्ता इत्यादि।

(ii) साधारण शक्तियाँ :- वे पर्यावरण शक्तियाँ जिनसे अवसाय का दूर का संबंध / नाता है एवं वे अवसाय के दैनिक गतिविधियों में महत्व नहीं रखते हैं, उसे साधारण शक्तियाँ कहते हैं जैसे :- सरकार, अधिनियम इत्यादि।

2

(ब) आंतरिक संबंध :- आंतरिक संबंधों से तात्पर्य अवसाय के अंदर के सभी उन संबंधों से है, जिन्हें अवसाय द्वारा समयानुसार परिवर्तन किया जा सकता है एवं इनसे अवसाय के उद्देश्य की पूर्ति होती है। उसे आंतरिक संबंध कहते हैं। जैसे :- कर्मचारी, अवसाय की नियमन प्रणाली, प्रबंधक आदि।

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	5.	नियंत्रण, कार्य में समन्वय की सुविधा करता है, क्योंकि इससे व्यवसाय के सभी कार्य आपस में जुड़ते हैं एवं एकता लाते हैं। नियंत्रण, नियोजन से जुड़ा हुआ है। अतः नियोजन में जिस प्रकार कार्यों में एकात्मकता आती है उसी प्रकार नियंत्रण से कार्य का पर्यवेक्षण सही तौर पर हो जाता है। जिससे कार्य में समन्वय की सुविधा निरंतर बनी रहती है।
1	6.	(i) उत्पाद की पहचान करना :- लेबलिंग के द्वारा उत्पाद की बाहरी लेबल द्वारा पहचान में सहायता मिलती है। लेबल से किसी विशिष्ट उत्पाद को पहचानने में सहायता मिलती है। जिससे ग्राहक उसे पहचान कर खरीद सके। (ii) उत्पाद की गुणवत्ता में सहायक :- लेबलिंग के द्वारा हमें उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में भी पता चलता है। क्योंकि लेबल पर उपयुक्त सामग्री जो उत्पाद के बनाने में आवश्यक है। ~~वह~~ उसका विवरण लेबल द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।
2	7.	(अ) निवारण पाने का अधिकार :- उपभोक्ता को दिये गये इस अधिकार में उसे यह अधिकार है कि उसके द्वारा दिये गये किसी भी सुनवाई का निवारण सरकार उपभोक्ता आयोग द्वारा करेगी। एवं उसे किसी भी क्षतिपूर्ति की सुनवाई करवाने का अवसर मिलेगा। इसे "सुनवाई का अधिकार" भी कहते है। (ब) उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार :- उपभोक्ता संरक्षण द्वारा पारित इस अधिकार में उपभोक्ताओं को अपनी पर्याप्त अधिकारों एवं दायित्वों की शिक्षा प्राप्त होना अनिवार्य है जिससे उपभोक्ता में जागरूकता पैदा हो एवं वह सामान की खरीद में सभी चीजों का ध्यान दे। उपभोक्ता को पर्याप्त शिक्षा से उसे अपने अधिकारों ~~का~~ आसानी से मालूम हो जाएंगे।

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	8.	'प्रबंध के सिद्धांत सर्वप्रयुक्त होते हैं' अर्थात सभी जगहों पर प्रयुक्त होते हैं। क्योंकि प्रबंध केवल व्यवसायों के लिए नहीं बल्कि दैनिक दिनचर्या में भी काम में लिये जाते हैं। प्रबंध के सिद्धांत सभी व्यवसायों चाहे वह संगठन गैर-लाभ-हानि वाला, लाभ कमाने वाला, सरकारी, गैर-सरकारी हो सभी में प्रबंध के सिद्धांतों की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी एक लाभ कमाने वाले संगठन में होती है। इससे कार्य समय पर पूरा हो जाता है।
2	9.	(i) नियोजन सर्वव्यापी है :- नियोजन प्रबंध के कार्य के रूप में सर्वव्यापी है, क्योंकि इसमें किसी भी चीज का पूर्वानुमान लगाकर उसे हासिल किया जा सकता है यह लाभकारी संगठन, गैर लाभकारी संगठन सभी में एक समान की प्रकृति रखने वाला होता है। ~~नियोजन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है :-~~ (ii) नियोजन प्रबंध का प्राथमिक कार्य है :- नियोजन प्रबंध का प्राथमिक कार्य होने के कारण इसका बहुत बड़ा महत्व है। इसके बिना प्रबंध के कार्य जैसे संगठन, निर्देशन, नियंत्रण सभी विफल सिद्ध हो जाते हैं। अर्थात इसे सोच समझ कर बनाना चाहिए।
2	10.	(i) कार्यात्मक संगठन ढाँचे में व्यवसाय की एक ही प्रकृति पर बड़े पैमाने पर कार्य करने से कर्मचारियों में कार्य के प्रति सजगता नहीं रहती है इसलिए उन्हें हमेशा अभिप्रेरित करते रहना चाहिए। जिससे कार्य का निष्पादन सही रूप में हो। (ii) कार्यात्मक संगठन ढाँचे में बड़े पैमाने पर एक ही उत्पाद का उत्पादन करने से उत्पादन लागत में बहुत बड़ी

BSER P/8/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

लागतों का खर्चा उठाना पड़ता है जिससे व्यवसाय को लाभ में गिरावट नजर आती है एवं माल पहले से ही पड़ा रहता है परंतु उसकी बिक्री करना मुश्किल हो जाता है।

11. वित्तीय प्रबंध :- वित्तीय प्रबंध का तात्पर्य वित्त का इस प्रकार उपयोग करना जिससे कि इससे उत्पन्न आय लागत से अधिक हो एवं अंशधारियों के लाभांश में वृद्धि हो। व्यावसायिक वित्त का प्रबंध इस प्रकार किया जाए कि उससे व्यवसाय एवं निवेशक दोनों का फायदा हो। वित्तीय प्रबंध से वित्त का फलोत्पादक उपयोग होगा जिससे ~~बिक्री~~ वित्त की मात्रा में बढ़ोतरी होगी।

2

12. (i) विक्रेता के दिशा-निर्देश का पालन करना :- उपभोक्ता का यह उत्तरदायित्व है कि वह विक्रेता द्वारा दिए गए सभी दिशा-निर्देशों की पालना अवश्य करें। जिससे उपभोक्ता को किसी भी प्रकार की क्षतिपूर्ति नहीं झेलनी पड़े।

2

(ii) कानूनी सम्मत मानकों को देखना :- उपभोक्ता का यह भी एक उत्तरदायित्व है कि वह बाजार से वही माल खरीदे जिन पर ISI, FPO, एगमार्क, हॉलमार्क इत्यादि में से कोई एक अवश्य हो। जैसे बिजली के सामानों पर ISI चिह्न को देखना एवं नहीं होने पर शिकायत दर्ज करवाना।

13. अनुशासन का सिद्धांत :- हेनरी फेयोल द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धांत के तहत किसी भी व्यवसाय में अनुशासन अवश्य होना चाहिए। अनुशासन से तात्पर्य नियम एवं नीतियों की पालना करना, कार्य को सही ढंग

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

से करना। एक सुसंगठित व्यवसाय तभी अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकता है, जब उसके कर्मचारियों एवं प्रबंधक दोनों में कार्य करने के प्रति अनुशासन हो एवं कोई भी नीति एवं नियमों को न तोड़ें।

14. (i) नियोजन से व्यवसाय को लक्ष्य की प्राप्ति होती है, जिस समय व्यवसाय के लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है उसी समय से नियोजन की शुरुआत होती है। यह एक संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है।

(ii) नियोजन से भविष्य में आने वाली अनिश्चितता की जोखिम को कम किया जा सकता है। क्योंकि नियोजन में जोखिमों का पहले से ही पूर्वानुमान लगा लिया जाता है, जिससे भविष्य में व्यवसाय को बड़ी हानि से बचाव मिलता है।

3

(iii) नियोजन से व्यवसाय को एक सतत मार्गदर्शन प्राप्त होता है, जिससे व्यवसाय अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का पहला कदम आगे बढ़ा सके। यह प्रबंध का प्रथम कार्य होने के लिए इसका इत्यादि कार्यों में भी महत्व रहता है।

15. (अ) चयन निर्णय :- चयन की ~~इस~~ प्रक्रिया में साक्षात्कार एवं संदर्भ पृष्ठभूमि जाँच के बाद जो उम्मीदवार आगे पास होते हैं उनका चयन पिछली सभी प्रक्रिया के तहत किया जाता है एवं उसके चयन ~~की~~ का निर्णय होता है। जिसके बाद उसका डॉक्टरी परीक्षण होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ब) डॉक्टरी परीक्षण :- चयन की इस प्रक्रिया में चयनित उम्मीदवार की शारीरिक जाँच की जाती है कि वह शारीरिक रूप से कार्य करने के लायक है या नहीं एवं मानसिक जाँच भी की जाती है कि वह मानसिक रूप से किसी बीमारी से ~~ग्रस्त~~ ग्रस्त तो नहीं है। इसके पश्चात पद प्रस्ताव प्रक्रिया प्रारंभ होती है।

3

(स) पद - प्रस्ताव :- डॉक्टरी परीक्षण में पास सभी उम्मीदवारों को यह सूचना दी जाती है कि आप यदि इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करते हैं, तो आप हमारी कंपनी में एक कर्मचारी बन सकते हैं। इसके पश्चात रोजगार समझौता होता है। जिसमें उसका वेतन, सुविधाएं पद इत्यादि बताया जाता है।

16. विभेदात्मक पारिश्रमिक प्रणाली :- एफ. डब्ल्यू. टेलर द्वारा प्रतिपादित इस तकनीक में टेलर कहते हैं कर्मचारियों को उनकी योग्यता एवं उनकी कार्य करने की क्षमता के आधार पर पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए। जिससे कम क्षमतावान कर्मचारी भी कार्य में अपनी जागरूकता बनाए रखेगा एवं कार्य को सही समय पर करेगा। जैसे दो कर्मचारी हैं 'अ' और 'ब' 'अ' प्रतिदिन के 10 उत्पाद का उत्पादन करता है जिससे उसे 10 × 100 = 1,000 रु. पारिश्रमिक प्राप्त होता है जबकि 'ब' प्रतिदिन केवल 7 उत्पाद का उत्पादन करता है अतः उसे 7 × 80 = 560 रु. पारिश्रमिक प्राप्त होता है। यह अंतर ही उनकी योग्यता एवं कार्य के निष्पादन स्तर को सुधारने में सहायक होता है।

3

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

17. (अ) शीघ्र निर्णय :- विकेंद्रीकरण एक आधारभूत कदम है क्योंकि इसमें सभी प्रबंधकों अर्थात निम्न स्तर के पर्यवेक्षक तक अधिकार सौंपे जाते हैं जिससे उनके विभाग में आने वाले किसी भी निर्णय को वहीं ले सकते हैं। इससे निर्णय लेने में शीघ्रता आती है।

(ब) श्रेष्ठ नियंत्रण :- विकेंद्रीकरण एक आधारभूत कदम है क्योंकि इसमें नियंत्रण सभी प्रबंधकों द्वारा किया जाता है अपने अधिकारों की शक्ति के माध्यम से अतः निम्न स्तर के पर्यवेक्षक के पास अपने कर्मचारी पर नियंत्रण करने का अधिकार होता है। जिससे व्यवसाय में श्रेष्ठ नियंत्रण होता है।

(स) शीर्ष प्रबंध को राहत :- विकेंद्रीकरण एक आधारभूत कदम है क्योंकि इसमें शीर्ष प्रबंध के अधिकार एवं दायित्व का प्रत्यायोजन पर्यवेक्षक तक ही जाता है। जिससे उसे अपने छोटे कार्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं रहती है।

(3)

18. औद्योगिक उत्पाद

- माल एवं पुर्जे
- पूंजीगत वस्तुएँ
- आपूर्ति एवं व्यावसायिक सेवाएँ।

(1) औद्योगिक उत्पाद :- वे उत्पाद जो किसी उत्पाद अथवा वस्तु के उत्पादन में आगम के रूप में कार्य करती हैं जैसे :- कच्चा माल, ग्रीस इत्यादि।

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) माल एवं पुर्जे :- ये वे औद्योगिक उत्पाद होते हैं, जो किसी उत्पाद के किसी मुख्य भाग के संचालन में अत्यधिक आवश्यक होते हो उन्हें माल एवं चल पुर्जे कहते हैं। जैसे :- कार के इंजन की पुर्जे इत्यादि।

(ii) पूंजीगत वस्तुएं :- वे औद्योगिक उत्पाद जो किसी दुकान की पूँजीगत अथवा पूँजी की मात्रा में बढ़ोतरी करती हैं, वे पूंजीगत वस्तुएं होती हैं जिनसे तैयार माल बनाया जाता है जैसे :- कच्चा माल से तैयार माल बनाना।

(iii) आपूर्ति एवं व्यावसायिक सेवाएँ :- वे औद्योगिक उत्पाद जो कि किसी किसी भौतिक वस्तुओं के संचालन के लिए केवल सेवा के पात्र ही होते हो वे आपूर्ति एवं व्यावसायिक सेवाएं होती है जैसे :- इंजन में ग्रीस करना एक आपूर्ति एवं व्यावसायिक सेवा है।

5

19. (i) व्यवसाय की प्रकृति :- व्यवसाय में कार्यशील पूँजी की आवश्यकता व्यवसाय की प्रकृति पर निर्भर करती है। क्योंकि यदि व्यवसाय एक ही उत्पाद का उत्पादन करता है तो उसे कार्यशील पूँजी की कम आवश्यकता होगी अपेक्षाकृत जिस व्यवसाय में अधिक उत्पाद का उत्पादन किया जाता है।

(ii) मौसमी कारक :- कुछ व्यवसायों में कार्यशील पूँजी मौसम के अनुसार लगती है। जैसे यदि गर्मी का महीना है तो कूलर की माँग की बढ़ोतरी होगी एवं व्यवसाय को भी अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होगी।

(iii) उत्पादन चक्र :- व्यवसाय में उत्पाद के उत्पादन का चक्र जिस प्रकार का होता है उसी प्रकार की कार्यशील पूँजी लगती है, जैसे उत्पादन चक्र अधिक जटिल प्रकृति का नहीं है, तो वहाँ कम कार्यशील पूँजी लगेगी।

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) व्यवसाय चक्र :- यह कारक व्यवसाय के चक्र के अनुसार उसकी कार्यशील पूँजी का निर्धारण करता है। जैसे यदि किसी व्यवसाय में परिवहन, भण्डारण, माल का रख-रखाव, उत्पादन इत्यादि क्रियाएँ एक साथ होती हैं, तो उसमें कार्यशील पूँजी अधिक लगेगी।

5

20. (i) आदेश की एकता का सिद्धांत : इस सिद्धांत के तहत यह स्पष्ट किया जाता है कि किसी भी कर्मचारी को एक ही अधिकारी से आदेश मिलने चाहिए। यदि वह अनेक अधिकारियों से आदेश लेगा तो वह भ्रमित हो जाएँगा।

(ii) निर्देश की एकता का सिद्धांत :- इस सिद्धांत के तहत किसी भी कर्मचारी को केवल एक ही अधिकारी निर्देशित करेगा यदि इस सिद्धांत का उल्लंघन होती है, तो वह कर्मचारी एक कार्य को भी पूरा नहीं कर पाऐगा।

(iii) संगठन में कर्मचारियों के अभिप्रेरणा का सिद्धांत :- इस सिद्धांत में संगठन में कार्य कर रहे सभी कर्मचारियों को समयानुसार अभिप्रेरणा मिलती रहनी चाहिए। जिससे कार्य का निष्पादन सही तरिके से होवें।

5

(iv) कुशल नेतृत्व का सिद्धांत :- निर्देशन के इस सिद्धांत में कर्मचारियों के नेतृत्व एक कुशल नेता के द्वारा ही किया जा सकता है जिससे उत्पादन की उत्पादकता में अधिकतम उत्पाद हो सके।

(81) ~~इक्यासी~~

अस्सी

संपूर्ण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSLR-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1382024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB 178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-178/2024